

16 **ΕΗΛΘΟΝ** [.] Ε

17]. ΑΦΙΗ[

18]ΟΡΕΥ .[

Ende der Seite korrekt

Blatt 60 →: Joh 16,23-28

Zeile 01 ergänzt

| | ριθ | Stichometrie |
|----|---|--------------|
| 01 | -σητε τον <u>πρα</u> εν τω ονοματι μ- | 22 |
| 02 | Ο[υ δώσει ὑμειν ^{16,24} εως αρτι ουκ ητη- | 25 |
| 03 | ΣΑΤΑΙ ² ΟΥΔ [εν εν τω ονοματι μου αι- | 26 |
| 04 | ΤΗΣΑΣΘΑΙ ³ [και λημψεσθε ἵνα η χα- | 25 |
| 05 | ΡΑ ὑΜΩ [ν η πεπληρωμενη· ²⁵ ταυ- | 21 |
| 06 | ΤΑ ΕΝ Π[αροιμiais λ]εΛΑΛη[κα ὑμειν | 27 |
| 07 | ε]Ρ ΧΕΤ [αι ωρα] ΟΤΕ ΟΥΚΕΤΙ ΕΝ ΠΑ [ροιμι- | 28 |
| 08 | αις λαλησω] ὑΜΕΙΝ· ΑΛ' Α[α] ΠΑΡ[ρη]ΣΙΑ | 26 |
| 09 | Π ΕΡΙ [του <u>πρ</u>]Σ· (ΑΛΛΗΣΩ ὑΜΕΙΝ·) ΑΠΑΓ' | 25 |
| 10 | ΓΕΛΩ [ὑ]μ ΕΙΝ ²⁶ ΕΝ [εκε]ινη τη η ΜΕΡΑ · | 24 |
| 11 | ΕΝ ΤΩ [ο]Ν ΟΜΑ [τι μου αιτησεσ]θαι ⁴ > κ, | 25 |

² Korrekt: ΗΤΗΣΑΤΕ.

³ Korrekt: ΑΙΤΗΣΑΣΘΕ.

⁴ Korrekt: ΑΙΤΗΣΕΣΘΕ.